सुबोध पंचतंत्र

(द्वितीय भाग)

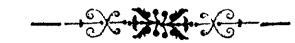

मूल लेखक—श्री विष्णुशर्मा

श्री लक्ष्मणप्रसाद भारद्वाज, एम. ए. साहित्यरत्न

द्वारा

पुनर्कथित एवं संपादित

प्रकाशक

(राजा) रामकुमार प्रेस, बुकडिपो

उत्तराधिकारी

नवलकिशोर प्रेस,

लखनऊ

東京外国語大学
49. 3. 30
圖書館藏書

द्वितीय बार] १९६० ई० [मूल्य [illegible]

विषय-सूची

कथा				पृष्ठ
गार की चालाकी	....	....	....	१
य तथा कर्ण-विहीन गधा	....	....	....	३
२३. कौवे और उल्लू की कथा	....	....	....	६
२४. अंधा प्रतिशोध	....	....	....	१५
२५. बन्दर और मगर	....	....	....	१८
२६. मेंढक तथा सर्प की कथा	....	....	....	२४
२७. रक्ताकर्षण	....	....	....	२६
२८. हाथी तथा खरगोश की कथा	....	....	....	२९
२९. न्यायाधीश बिल्ली	....	....	....	३३
३०. सैनिक कुम्हार	....	....	....	३७
३१. दुष्टा पत्नी	....	....	....	४०
३२. जैसे को तैसा	....	....	....	४३
३३. मूर्ख नाई	....	....	....	४५
३४. स्वामिभक्त नेवला	....	....	....	५१
३५. लोभी ब्राह्मण	....	....	....	५३
३६. शेर का जीवनदान	....	....	....	५८
३७. सहस्रबुद्धि, शतबुद्धि और एकबुद्धि	....	....	....	६०
३८. जुलाहे की कथा	....	....	....	६३
३९. बन्दर का बदला	....	....	....	६६
४०. मूर्ख राक्षस और मूर्ख बन्दर	....	....	....	७१
४१. त्र्योत्स्ना राजकुमारी	....	....	....	७४
४२. चार मूर्ख पण्डित	....	....	....	७९
४३. एक पेट दो मुखवाले पक्षी की कथा	....	....	....	८२
४४. धर्मबुद्धि और पापबुद्धि की कहानी	....	....	....	८३
४५. मू ं कछुवा	....	....	....	८६

इक्कीसवीं कथा

सियार की चालाकी

जंगल में घूमते-घूमते एक दिन चतुर्दन्त नामक सियार को एक मरा हाथी मिला। अनेक प्रयत्न करने पर भी चतुर्दन्त हाथी की हड्डियाँ न फोड़ सका और न पेट की खाल ही काट सका, जिससे वह उसके शरीर का मांस खा पाता। वह अन्य उपाय सोच ही रहा था कि वहाँ एक सिंह आ पहुँचा। उसे देखते ही वह डर गया और हाथ जोड़कर बोला—आइए महाराज! मैं आपके ही भोजन की रखवाली कर रहा हूँ।

शेर ने कहा—नहीं भाई—किसी दूसरे का मारा शिकार मैं नहीं खाता। इसलिये तुम्हीं इसे चैन से खाओ। यह कहकर वह वन में चला गया।

सिंह के जाते ही उधर से एक बाघ आ पहुँचा। उसे देखकर सियार ने सोचा—हत् तेरे की! एक बला गई तो दूसरी आ टपकी। परन्तु उसने नीति से काम लिया और कहा—चाचा! आप यहाँ किधर मौत के पंजे में आ फँसे? अभी-अभी हाथी को मार कर मुझे इसकी रखवाली में बैठाकर सिंह नदी में स्नान करने गया है और कह गया है कि यदि कोई बाघ आवे तो तुरन्त मुझे सूचना देना क्योंकि एक बार एक बाघ ने मेरा शिकार खा लिया था। तब से मैंने व्रत ले रक्खा है कि जो भी बाघ मिलेगा उसे मार डालूँगा और इस वन से उनका वंश ही समाप्त कर दूँगा। बाघ यह बात सुनते ही घबड़ाया और बोला—भाई! तब तो मैं चला। कृपया उसे मेरा पता मत देना।

बाघ के चले जाने पर एक तेंदुआ वहाँ आया। सियार ने सोचा कि इसके दाँत मजबूत हैं, इसलिये इससे सहायता लेनी चाहिए। यह सोच उसे देखकर प्यार से बोला—आओ भतीजे! कहाँ रहे इतने दिनों तक? भूखे मालूम पड़ते हो, आओ! देखो एक शेर इस हाथी को मार कर मेरी रखवाली में रख गया है, लगाओ भोग।

पर उसे शेर का शिकार समझकर तेंदुए ने उसे खाने से इन्कार कर दिया। सियार ने कहा—तुम खाओ; जैसे ही सिंह को देखूँगा तुम्हें आवाज लगा दूँगा। तुम भाग जाना।